

भारत अगली पीढ़ी के शहरों की ओर

यह एडिटोरियल 13/12/2022 को 'हिंदूस्तान टाइम्स' में प्रकाशित "The urban vision: Creating next-gen cities across India" लेख पर आधारित है। इसमें भारत के अगली पीढ़ी के शहरों के लिये शहरी विकास विज़िन के बारे में चर्चा की गई है।

संदर्भ

भारत की शहरी जनसंख्या [प्रकल्प घरेलू उत्पाद \(GDP\)](#) में 63% का योगदान करती है, जिसके बारे 2030 तक बढ़कर 75% हो जाने उम्मीद है। इस विशाल योगदान के बावजूद, सभी शहरों में विकास का एक समान स्तर नहीं रहा है, जिससे बड़े शहरों पर अत्यधिक दबाव बना है।

- हमारे बड़े शहर (Mega-cities) मलनि बस्तियों एवं असंगठित आरथिक गतिविधियों, अत्यधिक भीड़भाड़, नागरिक बुनियादी ढाँचे की गुणवत्ता में गरिवट, यातायात एवं परविहन अपर्याप्तता, जलवायु परिवर्तन और हमारी संस्कृति और विरासत के साथ बढ़ते अलगाव के रूप में अनौपचारिक क्षेत्र की वृद्धिका सामना कर रहे हैं।
- जबकि पिछले 25 वर्षों की आरथिक क्रांति ने भारत को शहरी आरथिक विकास पर केंद्रित एक प्रत्यामिन की ओर अग्रसर किया है, अब यह प्रकट है कि भारत को ऐसे समाधान विकसित करने की आवश्यकता है जो अपने अगली पीढ़ी के शहरों (Next-gen Cities) के लिये अधिक न्यायसंगत और सतत विकास को प्राथमिकता दें।



शहरी विकास की आवश्यकता को भारत ने कैसे चहिनति किया है?

- 1980 के दशक में [राष्ट्रीय शहरीकरण आयोग \(वर्ष 1988\)](#) के नियमों के साथ पहली बार भारत का अखिल भारतीय शहरी विज़िन व्यक्त हुआ।
- भारतीय संविधान ने [राज्य नीति के नियमित संविधानों](#) और [74वें संशोधन अधिनियम, 1992](#) के माध्यम से भारत के शहरी क्षेत्र में लोकतांत्रिक विकिंद्रीकरण (नगर निकाय) के लिये एक स्पष्ट अधिकार प्रदान किया है।
- इसके अतिरिक्त, स्थानीय निकायों पर [15वें वित्त आयोग की रपोर्ट](#) में नगर प्रशासन संरचनाओं को आरथिक रूप से सशक्त बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया।
- सरकार की हाल की पहलें:
 - [समारट स्टार्टेज](#)
 - [अमृत मिशन \(AMRUT\)](#)
 - [प्रधानमंत्री आवास योजना- शहरी](#)
 - [प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना](#)

भारतीय शहरों से संबद्ध प्रमुख मुद्दे

- **सुदृढ़ शहर नवीजन का अभाव:** भारत सुदृढ़ और सार्वभौमिक शहर नवीजन के अभाव का सामना कर रहा है, जो UNEP की एक रपोर्ट के अनुसार प्रतिवर्ष हमारे सकल घरेलू उत्पाद के 3% तक की लागत के बराबर हो सकता है।
 - इसमें शहरी सड़कों और फुटपाथों जैसी महत्वपूर्ण सार्वजनिक उपयोगताओं के लिये सार्वभौमिक शहरी डिज़िल मानकों का अभाव शामिल है।
 - अधिकांश नगर नवीजन प्राधिकरण आधुनिक और प्रयावरण-अनुकूल तकनीकों की कमी का सामना कर रहे हैं, जिसके परणामस्वरूप ढाँचागत अक्षमता उत्पन्न होती है।
- **जवाबदेही की असंगतता:** शहर की सरकारों का नेतृत्व शहर के महापौर या प्रबिद्ध द्वारा किया जाता है। अधिकांश शहरों में यही मॉडल सामान्य शासन तंत्र है।
 - हालांकि, वे राज्य सरकार द्वारा संचालित वभिन्न असंगठित सरकारी नकायों और अर्द्ध-सरकारी नकायों (जैसे जल, परविहन और विकास प्राधिकरण) द्वारा प्रबंधित किये जाते हैं तथा जनिके माध्यम से वे प्रायः शहर के कार्यों एवं नीतियों पर भावति करते हैं।
 - इससे जवाबदेही की असंगतता और ज़मिनेदारियों के टकराव की स्थिति बिनती है।
- **नागरिक केंद्रियता का अभाव:** नागरिक भागीदारी के लिये कोई संरचना मंच नहीं है (वार्ड समिति और एरिया सभा), कोई सुसंगत भागीदारी प्रक्रिया नहीं है (जैसे भागीदारी बजट), नागरिक शक्तियां नवीजन तंत्र पर याप्त मज़बूत नहीं हैं और वित्त एवं संचालन में पारदर्शता की कमी है—जो समस्या को और बढ़ाते हैं।
 - पारदर्शता, जवाबदेही और भागीदारी के मज़बूत घटक की अनुपस्थितिके परणामस्वरूप नागरिकों और सरकारों के बीच संलग्नता का स्तर कमज़ोर हो गया है। यह भरोसे के नमिन स्तर की ओर ले जाता है और इसने आम तौर पर शहर के लोकतांत्रिक मूलयों को कमज़ोर किया है।
- **अनधिकृत बस्तियाँ और मलनि बस्तियाँ:** ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवास करने वाले लोग शहरी क्षेत्रों में वास करने की उच्च लागत का वहन नहीं कर पाते हैं, जिससे प्रवासियों के लिये सुरक्षित आवास के रूप में मलनि बस्तियों का विकास होता है।
 - विश्व बैंक के अनुसार, भारत में मलनि बस्तियों में रहने वाली आबादी कुल शहरी आबादी की लगभग 35.2% है। मुंबई में धारावी को एशिया की सबसे बड़ी मलनि बस्ती माना जाता है।
- **अक्षम सीवेज सुविधाएँ:** तीव्र शहरीकरण से शहरों का बेतरीब और अनयोजित विकास होता है तथा अधिकांश शहर अपर्याप्त सीवेज तंत्र की समस्या से पीड़ित हैं।
 - भारत सरकार के अनुसार, भारत में उत्पन्न सीवेज का लगभग 78% अनुपचारित रहता है और इसे नदियों, झीलों या समुद्र में बहा दिया जाता है।
- **अकृशल परविहन प्रणाली और जलवायु परविरतन:** शहर के बहुत से नविसी सामाजिक प्रतिष्ठानों के नाम पर प्रायः नज़ी परविहन साधनों का उपयोग करते हैं। इससे सड़कों पर अत्यधिक भीड़भाड़, प्रदूषण और यात्रा समय में वृद्धि जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।
 - भारतीय शहरों में वाहनों की बढ़ती संख्या को जलवायु परविरतन के आवश्यक चालक के रूप में देखा जाता है, जो प्रायः दहनशील ईंधन पर अत्यधिक निर्भरता रखते हैं।

आगे की राह

- **शहर के विकास में केंद्र-राज्य सहयोग:** इस विषय में शहर मॉडल कानूनों एवं नीतियों का निर्माण कर केंद्र सरकार आगे कदम बढ़ा सकती है।
 - राज्य सरकारों को स्थानिक योजना, राजकोषीय विकिंद्रीकरण, नगर नकायों के लिये कैडर एवं भृती नियमों में प्रविरतन, महापौरों एवं नगरपालिका प्रविधियों को सशक्त बनाने और नागरिक भागीदारी के लिये विकिंद्रीकृत मंचों को स्थापित करने के विषय में संस्थागत सुधार लाने के लिये अग्रणी भूमिका नभिन्न की ज़रूरत है।
 - इसके अलावा, भारतीय शहर वभिन्न वार्डों का एक सामान्य डिजिटल GIS बेस-मैप तैयार कर सकते हैं, जो सेवा वितरण से संलग्न वभिन्न एजेंसियों द्वारा साझा किया जा सकता है।
- **अनोपचारिक शहरी अर्थव्यवस्था को संगठित रूप देना:** प्रवासियों पर डेटा एकत्र करना महत्वपूर्ण है ताकि शहर विकास गतिविधियों में उनका उपयोग कर प्रवासियों को लाभान्वित किया जा सके।
 - शरम मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित असंगठित शरमकि सूचकांक संख्या कार्ड (Unorganised Worker Index Number Card- UWIN Card) भी कार्यबल को औपचारिक बनाने में मदद करेगा।
- **नागरिकों की भागीदारी:** शहरी नवीजन प्रक्रियाओं के बारे में जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से नागरिकों को शहर-निर्माण कार्य में हतिधारक बनाया जाना चाहिये।
 - शहर के नेतृत्वकरता वर्ग को भी प्रबुद्ध एवं जागरूक होना चाहिये कि शहरों को रहने योग्य और समावेशी कैसे बनाया जाए।
- **शहरी रोज़गार गारंटी:** शहरी निर्धनों को बुनियादी जीवन स्तर प्रदान करने के लिये शहरी क्षेत्रों में भी मनरेगा जैसी कोई रोज़गार गारंटी योजना होनी चाहिये।
 - राजस्थान में शूरू की गई इंदिरि गांधी शहरी रोज़गार गारंटी योजना इस दिशा में एक स्वागतयोग्य कदम है।
- **हरति संक्रमण की ओर:** शहरी समस्याओं के प्रभावी समाधानों की ओर वभिन्न प्रयासों को संरेखित करने की आवश्यकता है, जिसमें नील-हरति अवसंरचना (Blue- Green Infrastructure), सार्वजनिक स्थानों का मशिरति उपयोग और सौर एवं पवन जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना शामिल हो सकता है।
 - शहरों के **हरति संक्रमण** (Green Transition) के लिये सार्वजनिक-नज़ी भागीदारी को भी आमंत्रित किया जाना चाहिये।

अभ्यास प्रश्न: भारत में शहरी नवीजन में व्याप्त प्रमुख खामियों की चर्चा कीजिये। साथ ही, सुझाव दीजिये कि भारत सतत शहरी विकास की दिशा में कैसे आगे बढ़ सकता है।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

प्रश्नों का संग्रह:

Q1. स्थानीय स्वशासन को नमिन में से कसिके अभ्यास हेतु सबसे अच्छी तरह प्रभाषित किया जा सकता है: (वर्ष 2017)

- (A) संघवाद
- (B) लोकतात्त्वकि वकिंद्रीकरण
- (C) प्रशासनकि प्रतनिधिमिडल
- (D) प्रत्यक्ष लोकतंत्र

उत्तर: (B)

प्रश्नों का संग्रह:

Q. क्या कमज़ोर और पछिड़े समृद्धार्थों के लिए आवश्यक सामाजिक संसाधनों की रक्षा करके उनके उत्थान के लिए सरकार योजनाएँ बनाने के कारण शहरी अर्थव्यवस्थाओं में व्यवसायों की स्थापना में बाधा आ रही है। (वर्ष 2014)

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-towards-next-gen-cities>

